प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड सन्स
कश्मीरी गेट, दिल्ली

१९५०
प्रथम संस्करण
मूल्य बारह आना

मुद्रक :
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
क्वींस रोड, दिल्ली

प्रस्तावना

आज जब कि संगीत-कला की उन्नति सरकार तथा भारतीय जनता द्वारा हो रही है। इस कला की उन्नति में सभी प्रयत्नशील हैं। श्री रामावतार जी 'वीर' द्वारा रचित *'संगीत-परिचय'* के भागों में संगीत के विषय को बहुत ही सुन्दर और सरल ढंग से लिखा गया है। संगीत-कला का ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिए ये पुस्तकें बहुत लाभदायक सिद्ध होंगी। इनके द्वारा संगीत के विद्यार्थी प्रारम्भिक शिक्षा बहुत सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं। आशा है कि शिक्षा-विभागों में इन्हें पूर्णतया अपनाया जायगा।

जीवनलाल मट्टू
संगीत सुपरवाइज़र
आल इण्डिया रेडियो
नई दिल्ली

तिथि
१३—१२—५०

दो शब्द

आज से पच्चीस वर्ष पूर्व जब मैंने संगीत-शिक्षण का कार्य प्रारम्भ किया था, तब से लेकर अब तक लगातार लड़के-लड़कियों के विभिन्न स्कूलों, कालिजों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करते हुये जो-जो कठिनाइयाँ मेरे सामने आती रही हैं, उनमें से एक मुख्य कठिनाई यह थी कि संगीत की ऐसी पुस्तकों का सर्वथा अभाव था, जिनके द्वारा संगीत में प्रवेश करने वाले अल्पायु के छात्र-छात्राओं को संगीत-शास्त्र सम्बन्धी प्रारम्भिक तथा आवश्यक ज्ञान दिया जा सके।

प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा है। संगीत शास्त्र के सुप्रसिद्ध आचार्य पं० विष्णु दिगम्बर जी पुलस्कर तथा श्री विष्णु नारायण भातखण्डे आदि महानुभावों ने भी प्रारम्भिक छात्रोपयोगी अपनी रचनाओं में इसी शैली को अपनाया है। प्रश्नोत्तर की यह शैली सरलता के साथ ही सुबोध और सर्वप्रिय भी है। 'संगीत-परिचय' के तृतीय भाग की लेखन-शैली को प्रश्नोत्तर का रूप न देकर वर्णनात्मक ही रखा है परन्तु वह भी सरल और सुबोध है।

स्वर-लिपि

'संगीत-परिचय' के तीनों भागों की स्वर लिपि श्री भातखण्डे जी के मतानुसार की गई है क्योंकि संगीत की उच्च श्रेणियों में भी इसी शैली को प्रमाणिक माना गया है।

यद्यपि संगीत का ज्ञान एक अच्छे शिक्षक के बिना प्राप्त करना कठिन है, फिर भी आशा है कि ये पुस्तकें संगीत के प्रारम्भिक ज्ञान को प्राप्त करने-कराने में पूर्णतया सहायक होंगी। संगीत ज्ञाताओं से मेरा विशेष अनुरोध है कि वे इन पुस्तकों की जिस त्रुटि को अनुभव करें, मुझे अवश्य ही उनसे अवगत कराने की कृपा करें। इसके लिये लेखक उनका बहुत आभारी होगा और आगामी संस्करण में उन त्रुटियों का यथोचित परिमार्जन कर दिया जायेगा। मैं श्री जीवनलालजी मट्टू म्यूजिक सुपरवाइजर आल इंडिया रेडियो, न्यू देहली का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने 'संगीत-परिचय' देखकर कुछ उपयोगी सुझाव दिए हैं। साथ ही इसकी प्रस्तावना लिखने का कष्ट किया है।

८८ बी, नया बाजार, दिल्ली
१५—१२—५०

रामावतार 'वीर'

विषय-सूची

स्वर लिपियों के चिह्न

१. शुद्ध स्वरों के ऊपर या नीचे कोई चिह्न नहीं होगा। जैसे—स रे ग म प ध नी।

२. कोमल स्वरों के नीचे--ऐसी रेखा होगी। जैसे-- रे॒ ग॒ ध॒ नी॒

३. तीव्र स्वर के ऊपर खड़ी रेखा होगी। जैसे—मं

४. मध्य सप्तक की स्वरों पर कोई चिह्न नहीं होगा। जैसे—स रे॒ रे ग॒ ग म मं प ध॒ ध नी॒ नी

५. मन्द्र सप्तक के स्वरों के नीचे विन्दु होंगे। जैसे-- स़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नी़

६. तार सप्तक के स्वरों के ऊपर विन्दु दिया जावेगा। जैसे--सं रें गं मं पं धं नीं

७. सम का चिह्न +

८. खाली का चिह्न ०

९. तालियों का चिह्न १ २ ३ ४

१०. एक मात्रा में दो स्वर जसे--ग म

११. विश्राम की मात्रा जैसे—स –

१२. जिन शब्दों के आगे--ऐसा चिह्न हो, वहाँ शब्द को लम्बा करना चाहिये।

नोटः—राग यमन कल्याण को राग यमन ही समझा जाये।

संगीत परिचय



पाठ पहला

स्वर ज्ञान

प्रश्न–स्वर किसको कहते हैं ?

उत्तर–सुरीली और मीठी आवाज जो कानों को भली प्रतीत हो उसे स्वर कहते हैं।

प्रश्न–मूल स्वर कितने होते हैं ?

उत्तर–मूल स्वर सात होते हैं।

प्रश्न–मूल स्वरों के पूरे नाम बताओ ?

उत्तर–मूल स्वरों के पूरे नाम इस प्रकार हैं।

(१) षडज, (२) ऋषभ, (३) गन्धार, (४) मध्यम, (५) पंचम, (६) धैवत और (७) निषाद्

प्रश्न–मूल स्वरों के आधे नाम बताओ।

उत्तर–मूल स्वरों के आधे नाम हैं:–

स रे ग म प ध नी

प्रश्न–स्वर कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर–स्वर तीन प्रकार के होते हैं।

प्रश्न-तीन प्रकार के स्वरों के नाम बताओ।

उत्तर-शुद्ध, कोमल और तीव्र

प्रश्न-शुद्ध स्वर कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर-शुद्ध स्वर दो प्रकार के होते हैं, चल और अचल।

प्रश्न-चल स्वरों के नाम और संख्या बताओ।

उत्तर-चल स्वर पाँच हैं। उनके नाम ये हैं।

रे ग म ध और नी।

प्रश्न-अचल स्वर कितने और कौन-कौन से हैं?

उत्तर-अचल स्वर दो हैं, स और प।

प्रश्न-शुद्ध स्वरों के नाम और संख्या बताओ।

उत्तर-शुद्ध स्वर सात हैं उनके नाम ये हैं:-

स रे ग म प ध नी

प्रश्न-कोमल स्वरों की संख्या और नाम बताओ।

उत्तर-कोमल स्वर चार हैं उनके नाम ये हैं

र॒ ग॒ ध॒ नी॒

प्रश्न-तीव्र स्वरों के नाम और संख्या बताओ।

उत्तर-तीव्र स्वर केवल एक है और वह मं है।

प्रश्न-शुद्ध, कोमल और तीव्र कुल कितने स्वर हैं?

उत्तर- शुद्ध, कोमल और तीव्र कुल १२ स्वर हैं।

प्रश्न-बारह स्वरों में से कितने शुद्ध, कितने कोमल और कितने तीव्र स्वर हैं?

उत्तर-सात शुद्ध, चार कोमल और एक तीव्र स्वर है।

पाठ दूसरा
सप्तक ज्ञान

प्रश्न–सप्तक किसको कहते हैं।

उत्तर–सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं।

प्रश्न–संगीत में कुल कितने सप्तक माने गये हैं।

उत्तर–संगीत में तीन सप्तक माने गये हैं।

प्रश्न–तीनों सप्तकों के नाम बताओ।

उत्तर–मध्यसप्तक, मन्द्रसप्तक, और तारसप्तक

प्रश्न–सप्तक में शुद्ध, कोमल और तीव्र स्वर मिल कर कुल कितने स्वर होते हैं ?

उत्तर–सप्तक में शुद्ध, कोमल और तीव्र मिल कर कुल बारह स्वर होते हैं।

प्रश्न–सप्तक में लगनेवाले बारह स्वरों के नाम और संख्या बताओ।

उत्तर–सप्तक में सात शुद्ध स्वर जैसेः– स रे ग म प ध नी चार कोमल स्वर जैसेः–रे ग ध नी और एक तीव्र स्वर जैसेः– मं

प्रश्न–सप्तक में लगने वाले बारह स्वरों के नाम क्रमशः बताओ।

उत्तर–बारह स्वरों के नाम और उनका चलन इसप्रकार है।

स्वर नं०	स्वर का पूरा नाम	स्वर का आधा नाम	शुद्ध कोमल या अचल स्वर
१	षडज	स	अचल
२	ऋषभ	रे	कोमल
३	ऋषभ	रे	शुद्ध
४	गन्धार	ग	कोमल
५	गन्धार	ग	शुद्ध
६	मध्यम	म	शुद्ध
७	मध्यम	मं	तीव्र
८	पंचम	प	अचल
९	धैवत	ध	कोमल
१०	धैवत्	ध	शुद्ध
११	निषाद	नी	कोमल
१२	निषाद	नी	शुद्ध

पाठ तीसरा

लय, ताल और काल

प्रश्न–लय किसको कहते है।

उत्तर–एक जैसी चलने वाली चाल को लय कहते हैं। जैसेः–घड़ी की टिक-टिक।

प्रश्न–संगीत में लय कितने प्रकार की मानी गई है?

उत्तर–संगीत में लय तीन प्रकार की मानी गई है।

प्रश्न–तीनों प्रकार की लयों के नाम बताओ।

उत्तर–तीनों प्रकार की लय इस प्रकार हैः–

१-मध्यलय, २-विलम्बितलय, ३-द्रुतलय।

प्रश्न–ताल किसे कहते हैं?

उत्तर–ताल संगीत का तराज़ू है जो तबले आदि पर बज कर गाने को नियम में रखता है।

प्रश्न–काल किसको कहते हैं।

उत्तर–काल ताल के खाली भाग को कहते हैं।

प्रश्न–ताल कैसे बनता है?

उत्तर–ताल मात्राओं के हिसाब से बनता है।

प्रश्न–मात्रा का समय कितना होता है?

उत्तर–मात्रा का समय एक सैकण्ड होता है।

प्रश्न–सम किसको कहते हैं?

उत्तर–ताल की पहली मात्रा को सम कहते हैं ।

प्रश्न–ताली किसको कहते हैं ?

उत्तर–दोनों हाथों को आपस में टकराने से जो आवाज पैदा होती है उसको ताली कहते हैं ।

प्रश्न–खाली किसको कहते हैं ?

उत्तर–दोनों हाथों को सीधा खोल देने का नाम खाली है ।

प्रश्न–ताल का अभ्यास किस प्रकार करना चाहिये ।

उत्तर–ताल का अभ्यास मात्राओं को गिनकर और ताली देकर करना चाहिये । जैसे :–

ताली	ताली	खाली	ताली
१–२–३–४	५–६–७–८	९–१०–११–१२	१३–१४–१५–१६

ताल साधन का ढंग

१ =	१	२	३	४
	ताली	ताली	ताली	ताली
२ =	१	२	३	४
	ताली	—	ताली	—

३ =	१	२	३	४	१	२	३	४
	ताली				ताली			

४= १ २ १ २ १ २ १ २

ताली खाली ताली खाली ताली खाली ताली खाली

५= १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

ताली – खाली – ताली – खाली –

६= १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

ताली – – – खाली – – –

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

ताली – – – खाली – – –

७= १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

ताली – – – ताली – – –

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

खाली – – – ताली – – –

नोट—मात्राओं की गिनती करते समय एक-एक उंगली को उठा लेना चाहिये। जैसे—

एक पर ताली और दो–तीन–चार की मात्रा को पहली, दूसरी और तीसरी उंगली क्रमशः उठाकर गिनना चाहिये।

———

पाठ चौथा

तीन ताल

प्रश्न–तीन ताल में कितनी मात्रायें होती हैं ?

उत्तर–तीन ताल में सोलह मात्रायें होती हैं।

प्रश्न–तीन ताल में कितनी-कितनी मात्राओं के कितने भाग होते हैं ?

उत्तर–तीन ताल में चार-चार मात्राओं के चार भाग होते हैं।

प्रश्न–तीन ताल के चारों भागों में से कितने भाग खाली के और कितने भाग ताली के होते हैं ?

उत्तर–तीन ताल में एक भाग खाली का और तीन भाग ताली के होते हैं।

प्रश्न–तीन ताल में कौन-कौनसी मात्रा पर ताली और कौन सी मात्रा पर खाली का स्थान है ?

उत्तर–तीन ताल में एक, पांच और तेरहवीं मात्रा पर ताली और नौवीं मात्रा पर खाली का स्थान है।

प्रश्न–तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर है ?

उत्तर–तीन ताल में सम पहली मात्रा पर है।

प्रश्न–तीन ताल की ताली और खाली को मात्राओं की गिनती के अधार पर दो ?

सम
उत्तर—पहली ताली — दूसरी ताली

×							
एक	दो	तीन	चार	पांच	छै	सात	आठ
१	२	३	४	५	६	७	८

खाली — तीसरी ताली

०				×३			
नौ	दस	ग्यारह	बारह	तेरह	चौदह	पन्द्रह	सोलह
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

प्रश्न—तीन ताल के तबले के बोल ताली खाली सहित उचारण करो।

सम
उत्तर—पहली ताली — दूसरी ताली

×				२			
धा	धिन	धिन	धा	धा	धिन	धिन	धा
१	२	३	४	५	६	७	८

खाली — तीसरी ताली

०				३			
धा	तिन	तिन	ता	ता	धिन	धिन	धा
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

पाठ पाचवां

राग ज्ञान

प्रश्न–आरोही किसको कहते हैं ?

उत्तर–स्वरों के चढ़ाव को आरोही कहते हैं। जैसेः–

स-रे-ग-म-प-ध-नी

प्रश्न–अवरोही किसको कहते हैं ?

उत्तर–स्वरों के उतराव को अवरोही कहते हैं। जैसेः–

नी-ध-प-म-ग-रे-स

प्रश्न–स्थायी किसको कहते हैं ?

उत्तर–गीत के पहले भाग को स्थायी कहते हैं।

प्रश्न–अन्तरा किसको कहते है।

उत्तर–गीत के दूसरे भाग को अन्तरा कहते हैं।

प्रश्न–वादी स्वर किसको कहते हैं ?

उत्तर–राग के राजा स्वर को वादी स्वर कहते हैं।

प्रश्न–संवादी स्वर किसको कहते हैं ?

उत्तर–राग के मंत्री स्वर को संवादी स्वर कहते हैं ।

राग यमन कल्याण

प्रश्न—यमन कल्याण राग में कितने स्वर लगते हैं ?

उत्तर—यमन कल्याण राग में सात स्वर लगते हैं।

प्रश्न—यमन कल्याण राग में कौन-कौन से तीव्र और कौन-कौन से शुद्ध स्वर लगते हैं ?

उत्तर—यमन कल्याण राग में मं स्वर तीव्र और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

प्रश्न—यमन कल्याण राग का वादी स्वर कौनसा है ?

उत्तर—यमन कल्याण राग का वादी स्वर 'ग' है।

प्रश्न—यमन कल्याण राग का संवादी स्वर कौनसा है ?

उत्तर—यमन कल्काण राग का संवादी स्वर 'नी' है।

प्रश्न—यमन कल्याण राग के गाने का समय कौनसा है।

उत्तर—यमन कल्याण राग के गाने का समय रात्री का पहला पहर है।

प्रश्न—यमन कल्याण राग के आरोही के स्वर उच्चारण करो।

उत्तर— स रे ग मं प ध नी सं

प्रश्न—यमन कल्याण राग के अवरोही के स्वर उचारण करो।

उत्तर— सं नी ध प मं ग रे स

राग काफी

प्रश्न–काफी राग में कितने स्वर लगते है ?

उत्तर–काफी राग में सात स्वर लगते हैं।

प्रश्न–काफी राग में कौन-कौन से स्वर कोमल और कौन-कौन से स्वर शुद्ध लगते हैं ?

उत्तर–काफी रागमें 'ग॒' और 'नी॒' दो स्वर कोमल और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

प्रश्न–काफी राग का वादी स्वर कौनसा है ?

उत्तर–काफी राग का वादी स्वर 'प' है।

प्रश्न–काफा राग का संवादी स्वर कौनसा है ?

उत्तर–काफी राग का संवादी स्वर 'स' है।

प्रश्न–काफी राग के गाने का समय कौनसा है ?

उत्तर–काफी राग के गाने का समय आधी रात का है।

प्रश्न–काफी राग के आरोही के स्वरों का उचारण करो।

उत्तर– स रे ग॒ म प ध नी॒ सं

प्रश्न–काफी राग के अवरोही के स्वरों का उच्चारण करो।

उत्तर– सं नी॒ ध प म ग॒ रे स

पाठ छठा

स्वर साधन विधि

स्वर साधन करते समय बालकों को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिये:—

१—आलती पालती मारकर सीधे बैठें।

२—तान पूरे के स्वर के साथ कण्ठ मिलाकर गायें।

३—झुककर न बैठें।

४—गर्दन बहुत ऊँची न रखें।

५—गला फाड़कर या बहुत मुंह खोलकर न गायें।

६—दाँत भींचकर या नाक में न गायें।

७—शब्दों का उच्चारण शुद्ध करें।

८—गाते समय अपने चेहरे को बिगड़ने न दें।

९—खाने खाने के तुरन्त बाद न गायें।

१०—गाने के तुरन्त बाद ठण्डी वस्तुओं का सेवन न करें।

११—गाने के बाद गर्म दूध पीना अच्छा है।

१२—लाल मिर्च, खटाई और तेल की बनी हुई वस्तुओं का प्रयोग कम करें।

———

पाठ सातवां

स्वर साधन

स

स रे

स रे ग

स रे ग म

स रे ग म प

स रे ग म प ध

स रे ग म प ध नी

स रे ग म प ध नी सं

सं

सं नी

सं नी ध

सं नी ध प

सं नी ध प म

सं नी ध प म ग

सं नी ध प म ग रे

सं नी ध प म ग रे स

एक स्वास में एक स्वर

आरोही- स रे ग म प ध नी सं
अवरोही- सं नी ध प म ग रे स

एक स्वास में दो स्वर

आरोही- सरे गम पध नीसं
अवरोही- संनी धप मग रेस

एक स्वास में तीन स्वर

आरोही- सरेग मपध नीसंसं
अवरोही- संनीध पमग रेसस

एक स्वास में चार स्वर

आरोही- सरगम पधनीसं
अवरोही- संनीधप मगरस

एक स्वास में पांच स्वर

आरोही- सरेगमप धनीसंनीसं
अवरोही- संनीधपम गरेसरेस

एक स्वास में छः स्वर

आरोही- सरेगमपध नीसंनीसंनीसं
अवरोही- संनीधपमग रेसरेसरेस

एक स्वास में सात स्वर

आरोही- सरेगमपधनी
अवरोही- नीधपमगरेस

एक स्वास में आठ स्वर

आरोही- सरेगमपधनीसं

अवरोही- संनीधपमगरेस

एक स्वास में सोलह स्वर

आरोही	अवरोही
स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स

एक स्वास में बत्तीस स्वर

आरोही	अवरोही
स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स
स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स

प्रश्न

एक स्वास में दो स्वरों का उच्चारण करो ।

एक स्वास में चार स्वरों का उच्चारण करो ।

एक स्वास में आठ स्वरों का उच्चारण करो ।

एक स्वास में सोलह स्वरों का उच्चारण करो ।

पाठ नवां

अलंकार-साधन

१

आरोही—स रे ग म प ध नी सं
अवरोही—सं नी ध प म ग रे स

२

आरोही—सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं
अवरोही—संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

३

आरोही—ससरे रेरेग गगम ममप पपध धधनी नीनीसं
अवरोही—संसंनी नीनीध धधप पपम ममग गगरे रेरेस

४

आरोही—सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं
अवरोही—संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

५

आरोही—सरेसरेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनी धनीधनीसं
अवरोही—संनीसंनीध नीधनीधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेस

प्रश्न

म	म	प	सं	ग	रे	ध
नी	म	ग	स	प	ध	सं
ग	रे	प	म	ध	रे	प

६

आरोही–सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं
अवरोही–संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

७

आरोही–सरेगमप रेगमपध गमपधनी मपधनीसं
अवरोही–संनीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेस

८

आरोही–सगरे रेमग गपम मधप पनीध धसंनी
अवरोही–संधनी नीपध धमप पगम मरेग गसरे

९

आरोही–समगरे रेपमग गधपम मनीधप पसंनीध
अवरोही–संपधनी नीमपध धगमप परेगम मसरेग

१०

आरोही–सगसगरेम रेमरमगप गपगपमध मधमधपनी
पनीपनी धसं
अवरोही–संधसंधनीप नीपनीपधम धमधमपग पगपगमरे
मरेमरेगस

प्रश्न

सरगम मपधनी धपमग नीधपम
रेगमपध मपधनीसं पमगरेस नीधपमग
रमग मधप गपम संधनी धमप गरेस
समगेर गधपम नीमपध परगाम
रेमरेमगप मधमधपनी संधसंधनीप धमधमपग

पाठ दसवां

ताल सहित अलंकार साधन

(१)

आरोही

×	×	×	×
स रे ग म	प ध नी सं	स रे ग म	प ध नी सं

अवरोही

सं नी ध प	म ग रे स	सं नी ध प	म ग रे स

(२)

आरोही

×	×	×	×
स स रे रे	ग ग म म	प प ध ध	नी नी सं सं

अवरोही

सं सं नी नी	ध ध प प	म म ग ग	रे रे स स

(३)

आरोही

×	×	×	×
स रे ग ग	रे ग म म	ग म प प	म प ध ध
प ध नी नी	ध नी सं सं	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

अवरोही

सं नी ध ध	नी ध प प	ध प म म	प म ग ग
म ग रे रे	ग रे स स	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

(४)

आरोही

×	×	×	×
स र ग म	रे ग म प	ग म प ध	म प ध नी
प ध नी सं	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

अवरोही

सं नी ध प	नी ध प म	ध प म ग	प म ग रे
म ग रे स	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

(५)

आरोही

×	×	×	×
स स रे ग	रे रे ग म	ग ग म प	म म प ध
प प ध नी	ध ध नी सं	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

अवरोही

सं सं नी ध	नी नी ध प	ध ध प म	प प म ग
म म ग रे	म ग रे स	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

(६)

आरोही

×	×	×	×
स रे स रे	ग म प प	रे ग रे ग	म प ध ध
ग म ग म	प ध नी नी	म प म प	ध नी सं सं

अवरोही

सं नी सं नी	ध प म म	नी ध नी ध	प म ग ग
ध प ध प	म ग रे रे	प म प म	ग रे स स

पाठ ग्यारहवां

एक मात्रा विश्राम सहित अलंकार साधन

(१)

आरोही

×	×	×	×
स — रे —	ग — म —	प — ध —	नी — सं —

अवरोही

सं — नी —	ध — प —	म — ग —	रे — स —

(२)

आरोही

×	×	×	×
स स रे —	रे रे ग —	ग ग म —	म म प —
प प ध —	ध ध नी —	नी नी सं —	१ २ ३ ४

अवरोही

सं सं नी —	नी नी ध —	ध ध प —	प प म —
म म ग —	ग ग रे —	रे रे स —	१ २ ३ ४

(३)

आरोही

स रे ग —	रे ग म —	ग म प —	म प ध —
प ध नी —	ध नी सं —	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

अवरोही

सं नी ध —	नी ध प —	ध प म —	प म ग —
म ग रे —	ग रे स —	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४

(४)

आरोही

×	×	×	×
स रे स रे	ग — ग—	रे ग रे ग	म — म—
ग म ग म	प — प—	म प म प	ध — ध—
प ध प ध	नी— नी—	ध नी ध नी	सं — सं—

अवरोही

सं नी स नी	ध — ध—	नी ध नी ध	प — प—
ध प ध प	म — म—	प म प म	ग — ग—
म ग म ग	रे — रे—	ग रे ग रे	स — स—

(५)

आरोही

×	×	×	×
स रे ग म	प — प—	रे ग म प	ध —ध—
ग म प ध	नी—नी—	म प ध नी	सं—सं—

अवरोही

सं नी ध प	म — म—	नी ध प म	ग — ग—
ध प म ग	रे — रे—	प म ग रे	स —स—

(६)

आरोही

×	×	×	×
स — रे—	ग म प ध	नी — सं—	नी — सं—

अवरोही

सं —नी —	ध प म ग	रे — स—	रे — स—

(७)

आरोही

×	×	×	×
म र ग म	प — ध —	नी सं नी सं	नी — सं —

अवरोही

सं नी ध प	म — ग —	रे स रे म	रे — स —

(८)

आरोही

×	×	×	×
स ग रे ग	म — प —	रे म ग म	प — ध —
ग प म प	ध — नी —	म ध प ध	नी — सं —

अवरोही

सं ध नी ध	प — म —	नी प ध प	म — ग —
ध म प म	ग — रे —	प ग म ग	रे — स —

(९)

आरोही

स — स रे	ग म प —	रे — रे ग	म प ध —
ग — ग म	प ध नी —	म — म प	ध नी सं —

अवरोही

सं — सं नी	ध प म —	नी — नी ध	प म ग —
ध — ध प	म ग रे —	प — प म	ग रे स —

पाठ १२

राग यमन कल्याण

१. इस राग में सात स्वर लगते हैं।

२. इस राग में मं तीव्र बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

३. इस राग का वादी स्वर "ग" है।

४. इस राग का संवादी स्वर "नी" है।

५. इस राग के गाने बजाने का समय रात्री का पहला पहर है।

आरोही=स रे ग मं प ध नी सं

अवरोही=सं नी ध प मं ग रे स

पकड़ = ऩी रे ग रे स प मं ग रे स

ताल सरगम राग यमन कल्याण

ताल तीन

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
		सं — नी ध	मं प ग मं
प — प —	ग रे स स	ऩी ऩी रे रे	ग रे ग ग
प — ग र	नी रे स —		

अन्तरा

		ग — ग ग	प — ध प
सं — सं —	नी रें सं —	नी — नी नी	ध प ध नी
सं — रें सं	गं रें सं नी	ध ध प —	प मं ग मं
ग — ग रे	नी रे स —		

राग यमन कल्याण

(ताल तीन मात्रे १६)

शब्द गुरु नानक (श्री गुरू ग्रन्थसाहब)

प्रभ मेरा अन्तरयामी जान।

कर किरपा पूरन परमेसर, निहचल सच शब्द निसान ॥
हर बिन आन न कोई समरथ, तेरी आस तेरा मन तान।
सरब घटा के दाते स्वामी, दे सो पहरन खान ॥
सुरत मत चतराई शोभा, रूप रंग धन मान ॥
सरब सुख आनन्द 'नानक', जप राम नाम कल्याण ॥

राग यमन कल्याण

(तीन ताल मात्रे १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिंन तिंन ता	ता धिं धिं धा
		ग रे ग प	सं प ग रें
		प्र भु मे रा	अं — त र
ग रे नी रे	स — — —	नी नी रे रे	ग — ग —
या — मी —	जा — न —	क र कि र	पा — पू —
प प ग रे	नी रे स —	नी — रें —	ग — प —
र न प र	मे — श्र र	नह — चल	स — च —
नी सं नी ध	प सं ग —		
श ब्द नि स	ना — न —		

अन्तरा

		प प ग ग	प — ध प
		ह र त्रि न	आ — न ना
सं — सं —	नी रें सं —	नी — नी नी	— ध नी सं
को — ई —	स म र थ	ते — री आ	— स ते —
रें सं नी ध	ध — प —	ग ग रे —	ग — प —
री — म न	ता — न —	स र्व धा —	दा — के —
रे ग रे —	नी रे स —	नी — रे —	ग — प प
दा — ते —	स्वा — मी —	दे — सो —	प ह र न
नी सं नी ध	प म ग —		
स्वा — — —	— — न —		

राग यमन कल्याण

ताल तीन

शब्द गुरू नानक (श्री गुरू ग्रन्थसाहब)

सब कुछ जीवत को व्यौहार ।
मात-पिता, भाई, सुत, बांधव,
अर पुन गृह की नार ॥ ध०
तन ते प्रान होत जब न्यारे,
प्रेत प्रेत पुकार ।
आध घड़ी कोऊ नहिं राखै,
घरतें देत निकार ॥
मृग-तृस्ना ज्यों जग रचना यह,
देखौ हदैं विचार ।
कह 'नानक' भजु राम नाम नित,
जां ते होत उधार ॥

राग कल्याण

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धि धि धा	धा धि धि धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं ध
		मं प नी ध	मं प मं प
		स ब कुछ	जी — व त
मं ग रे ग	मं — प —	ग — ग र	ग मं प —
को — ध्यो —	हा — र —	मा — त पि	ता — भा —
ग — ग रे	नी़ रे म —	नी़ नी़ रे रे	ग — प —
ई — सु त	ब न्धु प —	अ रु पु नि	गृह की
नी सं नी ध	प मं ग —		
ना — आ —	आ — र —		

अन्तरा

		ग ग प —	प ध प ध
		त न ते —	प्रा — ण हो
सं सं सं सं	नी रें सं —	सं — नी ध	नी सं रें सं
ओ त ज व	नि या रे —	टे — र त	प्रे — त पु
नी सं नी ध	प — — —	ग — ग रे	ग मं प —
का — आ —	रें — — —	आ — ध घ	ही — को —
ग मं ग रे	नी़ रे म —	नी़ नी़ रें —	ग — प ध
ऊ — ना —	रा — ख त	ब र से —	दे — त नी
नी सं नी ध	प मं ग —		
का — आ —	आ — र —		

राग यमन कल्याण

ताल तीन मात्रे १६

शब्द कबीर

राम सिमर पछितायेंगा मनुआ
पापी ज्यूड़ा लोभ करत है, आज काल उठ जायेंगा ॥
लालच लागे भरम गंवाया, माया भरम भुलायेंगा ।
धन जोबन का गरभ न कीजै, कागद ज्यों गल जायेंगा ॥
ज्यों जम आये केश गह पटके, ता दिन कछू न बसायेंगा ।
सिमरन भजन दया नहीं कीनी, तो मुख चीटां खायेंगा ॥
धर्मराय जब लेखा मांगे, क्या मुख ले के जायेंगा ।
कहत 'कबीर' सुनो रे सनतो, साध संगत तर जायेंगा ॥

राग यमन कल्याण

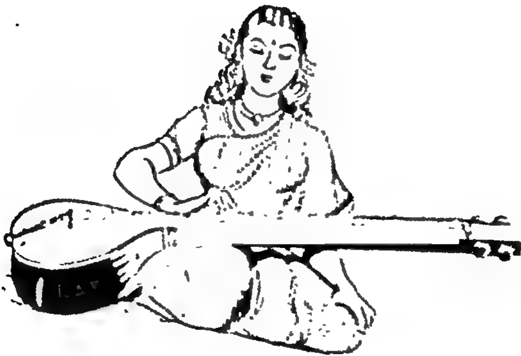
(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धिन धिन धा	धाधिनधिनधा	धा तिन तिन ता	ता धिन धिन धा
		सं — नी ध	मं प ग मं
		रा — म सु	म र प छ
प मं प —	ग रे स —	नी — रे रे	ग रे ग —
ता यें गा —	म नु आं —	पा — पी —	ज्यू — ड़ा —
प — ग रे	नी रे स —	ग — ग ग	प प ध प
लो — भ क	र त है —	आ — ज का	— ल उ ठ
नी सं नी ध	प म ग —		—
जा यें गा —	आ — — —		

अन्तरा

		ग — रा ग	प — ध —
		ला — ल च	ला गे —
सं सं सं सं	नी रे सं —	नी — नी —	नी नी ध नी
ज न म गं	वा — यो —	मा — या —	भ र म भु
सं रें नी सं	नी ध प —	प प प —	मं प ग मं
ला यें गा —	आ — — —	ध न जो —	व न का —
प मं ग. रे	नी रे स —	ग — ग ग	प — ध प
ग र भ न	की — जे —	का — ग द़	ड्यों ग ल
नी सं नी ध	प म ग —		
जा यें गा —	प़ — — —		



पाठ १३

राग बिलावल

१. इस राग में सात स्वर लगते हैं।
२. इस राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं।
३. इस राग का वादी स्वर "ध" है।
४. इस राग का संवादी स्वर "ग" है।
५. इस राग के गाने बजाने का समय प्रातःकाल है।
६. आरोही स रे ग म प ध नी सं
अवरोही सं नी ध प म ग रे स
पकड़ सं नी ध प, म ग, रे स

राग बिलावल

(ताल सरगम ताल तीन)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धि धि धा	धा धि धि धा	धा ति ति ता	ता धि धि धा
		प नी सं रे	नी सं धा प
रे ग म प	ग म रे स		

अन्तरा

		प — प प	नी — नी —
सं — सं —	गं रे सं सं	प नी सं रे	नी सं ध प
रे ग म प	ग म रे स		

राग बिलावल

(ताल तीन मात्रा १६)

शब्द गुरू नानक (श्री गुरू ग्रन्थसाहब)

स्वामी सरन परियो दरवारे।
कोटि अपराध खण्डन के दाते,तुझ बिन कौन उभारे॥
खोजत खोजत बहु परकारे, सरब अरथ बिचारे।
साध संग परम गत पाइये, माया रच बन्धारे॥
चरन कमल संग प्रीत मन लागी, सुरजन मिले प्यारे।
"नानक" आनन्द करे हर जप जप, सगले रोग निवारे॥

राग बिलावल

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम				ताली				ख़ाली				ताली			
×				२				०				३			
धा	धि	धि	धा	धा	धि	धि	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धि	धि	धा
सं	—	ध	प	म	ग	म	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	स
स्वा	—	मी	—	स	र	न	प	ड़ि	यो	द	र	वा	—	रे	—
स	—	ग	म	प	—	नी	नी	सं	—	सं	—	नी	रें	सं	—
को	—	ट	अप	रा	—	ध	खं	ड	न	के	—	दा	—	ते	—
प	—	नी	नी	सं	—	सं	सं	पनी	सरें	संनी	धप	म	—	ग	—
तु	झ	बि	न	कौ	—	न	उ	भा	—	—	—	रे	—	—	—

अन्तरा

प — प प	नी— नी नी	सं सं सं सं	नी रें सं —
खो — ज त	खो— ज त	ब हू प र	का — रे —
प — प प	नी— सं —	प नी सं रें	सं नी ध प
स र व अ	र्थ — वि —	चा—आ —	रे — ऐ —
गं — गं रें	—रें रें स	प नी सं रे	सं नी ध प
सा — ध सं	ग — — प	र म ग त	पा ई ये —
ग — ग ग	प — नी नी	पनीसंरेंसंनीधप	म — ग —
मा — या —	र च ब न	धा आ— —	रे — ऐ —

राग बिलावल

(ताल तीन मात्रा १६)

शब्द गुरू नानक (श्री गुरू ग्रन्थसाहब)

ऊंचे अपार वे अंत स्वामी ।
कौन जाणे गुण तेरे ॥
गावत ऊधरे सुनते ऊधरे ।
विनसे पाप घनेरे ॥
पसू परे तम गध को तारे ।
पाहन पार उतारे ॥
'नानक दास', तेरी सरनाई ।
सदा सदा बलेहारे ॥

राग बिलावल

(ताल तीन मात्रा १६).

शब्द गुरू नानक (श्री गुरू ग्रन्थसाहब)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धि धि धा	धा धि धि धा	धा ति ति ता	ता धि धि धा
			रे ग प ध
			ऊं — चे अ
सं — सं नी	सं रें नी सं	ध प ग म	रे ग म प
पा — र वे	अं — त स्वा	— — मी —	कौ — न जा
ग म रे स	रे ग म प	सं — ध प	
ने — गु न	ते — ऐ —	रे — — —	

अन्तरा

			प — नी नी
			गा — व त
सं सं सं —	धनी संरें नीसं —	ध ध प —	नी सं गं रें
उ ध रे —	सु न ते —	उ ध रे —	ग न से —
नी सं ध प	रे ग म प	ग म रे स	
पा — प ध	ने — ऐ —	ऐ — रे —	

राग बिलावल

तीन ताल

भजन कबीर

बीत गये दिन भजन बिना रे ।
बाल अवस्था खेल गँवायो,
जब जवानी तब मान घना रे ॥१॥
लाहे कारन मूल गँवायो ।
अजहुँ न गई मन की तृषना रे ॥२॥
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो ।
पार उतर गये संत जना रे ॥३॥

राग बिलावल

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
		प नी सं रें	नी सं ध प
		बी — त ग	ये — दि न
रे ग म प	ग म रे स		
भ ज न बि	ना — रे —		

अन्तरा

		प — प प	नी — सं —
		वा — ल अ	व स था —
गं — रें रें	सं नी सं —	प नी सं रें	नी सं ध प
खे — ल गं	वा — यो —	ज य जवा —	— नी त व
रे ग म प	ग म रे स		
मा — न घ	ना — रे —		



पाठ १४

राग काफी

१. इस राग में सात स्वर लगते हैं ।

२. इस राग में 'ग', 'नी' यह दो स्वर कोमल बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

३. इस राग का वादी स्वर 'प' है।

४. इस राग का संवादी स्वर 'स' है।

५. इस राग के गाने बजाने का समय आधी रात का है।

आरोही—स रे ग़ म प ध ऩी सं

अवरोही—सं ऩी ध प म ग़ रे स

पकड़—सस रेरे ग़, म म प

ताल सरगम राग काफी

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
		स स रें रे	ग़ — म म
प — पं —	रे ग़ रे स	रे ऩी ध ऩी	प ध म प
ग़ म ग़ प	म ग़ रे म		

अन्तरा

		म म प प	नी — नी नी
सं — सं —	गुं रें सं सं	नी ध प म	प ध म प
गु म गु प	म गु रे स		

राग काफी

ताल तीन

शब्द गुरु नानक (श्री गुरू ग्रन्थसाहब)

यह मन नेक न कह्यो करे।
सीख सिखाय रह्यो अपनी सी।
दुरमति तें न टरे॥
मद माया वस भयो बांवरो,
हरी जस नहीं उचरे॥
करि परपंच जगत के डहकै,
अपनौ उदर भरें॥
स्वान-पूंछ ज्यों होय न सूधौ,
कह्यो न कान धरें॥
कहु 'नानक' भजु राम नाम नित,
जातें काज सरे॥

राग काफी

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
	गु र स नी	स — रे रे	गु — म म
	य ह् म न	ने — क न	कह्यो- — क
प — — —	गु र स नी	रे नी ध नी	प ध म प
रे — — —	य ह् म न	सी — ख सि	खा — ये —
ग म ग प	म ग म —	रे गु रे म	गु रे स नी
र ह्यौ श्र प	नी — सी —	दु र म ति	तें — न ट
स — — —	गु र स नी		
रे — — —	य ह म न		

अन्तरा

		म म प —	नी — सं सं
		म द् मा —	या — च स
रें गुं रें सं	रें नी सं —	सं सं सं रें	नी ध प ध
भ यो — वां	— व रो —	ह रि ज स	न हीं उ च
सं — — —	संनी धप मगु रे	र नी ध नी	प ध म प
रें — — —	गं — — —	क रि प र	पं — च ज
ग म ग प	म गु म —	रे गु रे म	गु रें स नी
ग त कं —	ढ ह् कैं —	अ प नौ —	उ द् र भ
म — — —			
रें — — —			

राग काफी

शब्द गुरु नानक (गुरु ग्रन्थ साहब

प्रीतम जान लेयो मन माहीं।
अपने सुख सों ही जग फाद्यो, को काहू को नाहीं॥
सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहूँ दिस घेरे।
विपति पड़ी सब ही संग छांड़त, कोऊ न आवत नेरे॥
घर की नार बहुत हित जास्यों सदा रहत संग लागी।
जब ही हंस तजि एह काया, प्रेत-प्रेत कर भागी॥
एह विधि को व्योहार बनयो, जांसों लेहू लगायो।
अंत बार 'नानक' बिन हरजी, कोऊ काम न आयो॥

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धि धि धा	धा धि धि धा	धा ति ति ता	ता धि धि धा
	नी — ध प	म ध प ग	रे — म म
	प्री — त म	जा न लि यो	ओ — म न
प — प —	र ग रे स	सनी स रे रे	ग — म म
मां — हीं —	प्री — त म	जा न लि यो	ओ — म न
प — प —	नी — ध प	ग ग ग —	ग ग ग —
मां — हीं —	प्री — त म	अ प ने —	सु ख सों —
रे — रे रे	ग रे स —	प म ध प	ग रे म म
ही — ज ग	फा — — यो	को ऊ — क	हू — को —
प — प —	नी — ध प		
ना — हीं —	प्री — त म		

अन्तरा

		म म प —	नी — नी नी
		सु ख में —	आ — न व
सं — रें गुं	रें — सं सं	सं सं रें नी	— ध प ध
हु त मि ल	वै — ठ त	र ह त चहूं	— दि सी घे
— सं — —	ध नी ध म	सं सं सं सं	नी — ध प
— रे — —	ऐ — — —	वि प त प	ड़े — त व
म — ध प	गु — रे र	म ध प —	गु रे म म
ही — सं ग	छां — ड त	को ई न —	आ — व त
प — प —	नी — ध प		
न — ड़े —	प्री — त म		

राग काफी

(ताल तीन मात्रा १६)

भजन कबीर

मन तोहे कहि विधि मैं समझाऊँ ।
सोना होय तो सुहाग मँगाऊँ, बंक नाल रस लाऊँ ।
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊँ, पानी कर पिघलाऊँ ॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊँ, ऊपर जीन कसाऊँ ।
होय सवार तेरे पर बैठूं, चाबुक देके चलाऊं ॥
हाथी होय तो जंजीर गढ़ाऊं चारों पैर बंधाऊं ।
होय महावत तेरे पर बैठूं, अंकुश लेके चलाऊं ॥
लोहा होय तो अहरण मंगाऊं, ऊपर धुवन धुवाऊं ।
धूवन की घनघोर मचाऊं, जंतर तार खिंचाऊं ॥
ज्ञानी न होय ज्ञान सिखलाऊं, सत्य की राह चलाऊं ।
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, अमरा पुर पहुँचाऊं ॥

राग काफी

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
१	२	०	३
ध धि धि धा	धा धि धि धा	धा तिं तिं ता	ता धि धि धा
		स स रे रे	ग — म म
		क ही वि धी	मैं — स म
प — प —	रे गु रे स		
झा — ऊं —	म न तो है		

अन्तरा

		म — प —	नो — नां ना
		सो — ना —	हो ये तो गु
सं — सं गुं	रें — मं —	सं — रें नी	— ध प ध
हा — न मं	गा — ऊं —	धं — फ ना	— ल र स
सं — सं —	नी ध प —	सं सं सं नी	ध प — —
ला — ऊँ —	— — — —	ध्या न श ब्द	की — — —
म — ध प	गु — र —	स — रे —	गु गु म म
फूँ — फ ल	गा — ऊं —	पा — नी —	क र पि घ
प — प —	रे गु रें स		
ला — ऊँ —	म न तो है		

पाठ १५

राग भूपाली

१. इस राग में पांच स्वर होते हैं इसमें 'म' और 'नी' यह दो स्वर नहीं लगाये जाते
२. इस राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं।
३. इस राग का वादी स्वर 'ग' है।
४. इस राग का संवादी स्वर 'ध' है।
५. इस राग के गाने बजाने का समय रात्रि का प्रथम पहर है।

आरोही = स रे ग प ध सं
अवरोही = सं ध प ग रे स
पकड़ = ग रे स ध़, स रे ग प ग ध प ग रे स

ताल सरगम राग भूपाली

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

×	२	०	३
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
		ध सं ध प	ग रे स रे
ग — ग —	प रे ग ग		

अन्तरा

		ग प ग ग	प — ध ध
सं — सं —	ध ध सं —	सं सं ध —	सं सं गं रें
सं सं ध प	ग रे स स		

राग भूपाली

ताल तीन मात्रे १६

शब्द गुरु नानक (श्री गुरु ग्रंथ साहब)

हर की गत न कोऊ जाने ।
जोगी जती तपी पच हारे, अरु बहुलोक सियाने ॥
छिन में राओ रंक को करियो, राओ रंक कर डारे ।
रीते भरे-भरे सखनावें, यह तांको वियहारे ॥
अपनी माया आपप सारी, आपे देखन हारा ।
नाना रूप धरे बहुरंगी, सबते रहे न्यारा ॥
अगनत अपार, अलख निरंजन, जे सब जग भरमायो ।
सगल भरम तजे 'नानक' प्राणी, चरण तोहे चित लायो ॥

राग भूपाली

ताल तीन मात्रा १६

सम	ताली	खाली	ताली
१	२	०	३
धा धि धि धा	धा धि धि धा	धा ति ति ता	ता धि धि धा
		सं सं ध प	ग रे म रे
		हर — की —	न त ना —
ग — ग —	प रे ग —	ग — ग —	प प — ध
को — ऊ —	जा — ने —	जा — गी —	ज ती — तं
सं — सं सं	ध रें सं —	ध ध ध ध	सं — रें रें
पी — प ह	हा — रे —	अ र व हु	लो — म नि
ध सं ध प	ग रे स —		
आ — सा —	ने — रे —		

अन्तरा

		ग ग ग —	प — प ध
		छिन में —	स — च रं
सं — सं —	ध रें सं —	ध — ध ध	सं - सं सं
क — को —	क रि ये —	रा — व रं	रंक — क रि
ध सं रें गं	रें सं ध प	गं — गं —	सं रें — सं
डा — — —	रे — — —	रे — ते —	भ रे — भ
ध — सं सं	ध — प —	ग — प --	ध — सं —
रे — सु ख	ना — वे —	यह ता —	को — बहू
ध सं ध प	ग रे स —		
हा — — —	रे — — —		

राग भूपाली

शब्द गुरु नानक (श्री गुरु ग्रंथ साहब)

या जग मीत न देख्यो कोई।

सकल जगत अपने सुख लाग्यो,
दुखः में संग न होई ॥ अ०

दारा मीत, पूत सम्बन्धी,
सगरे धन सों लागे।

जब ही निरधन देख्यो नर को,
संग छांडि सब भागे ॥

कहा कहूँ या मन बौरे कौं,
इन सों नेह लगाया।

दीनानाथ सकल भय भंजन,
जस ताको बिसराया ॥

स्वान-पूंछ ज्यों भयो न सूधो,
बहुत जतन मैं कीन्हो।

'नानक' लाज बिरुद की राखो
नाम तिहारा लीन्हों ॥

राग भूपाली

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धि धि धा	धा धि धि धा	धा ति ति ता	ता धि धि धा
	ग — ग रे	ग प ग रे	स ध़ स रे
	या — ज ग	मी — त न	दे — क्यो
प — ग —	ग ग ग ग	प प ध प	सं — सं सं
को — ई —	स क ल ज	ग त अ प	नें — सु ख
ध रें सं —	ध ध सं —	रें — सं मं	ध सं ध प
ला — गे यो —	दु ख: में —	सं — ग न	हो — ओ —
ग रे स —			
ई — — —			

अन्तरा

	ग — ग —	प — ध प	सं — सं सं
	दा — रा —	मी — त —	पू — त सं
ध रें सं —	प प प —	सं मं रें —	ध सं रें सं
ब न धी —	स ग रे —	ध न सों —	ला — आ —
ध प — —	ध सं रें गं	सं रें सं —	ध सं ध प
गे — — —	ज ब ही —	नि र ध न	दे — क्यो —
ग रे स —	ध़ — स रें	ग प ध सं	ध सं ध प
न र को —	स गं छां —	डो — स ब	भा — आ —
ग रे स —			
गे — — —			

राग भूपाली

ताल तीन मात्रा १६

भजन कबीर

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी।
जप तप साधन कछु नहीं लागत, खरचत नहीं गठरी।
संतत संपत सुख के कारण, जासों भूल परी।
कहत 'कबीर' राम न जा मुख, ता मुख धूल भरी॥

राग भूपाली

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

सम	ताली	खाली	ताली
×	२	०	३
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
		ध सं ध प	ग रे म रे
		रा — म गो	वि — न्द ह
ग — — ग	प रे ग ग		
री — — भ	जो रे भै या		

अन्तरा

		ग प ग ग	प — ध ध
		ज प त प	सा — ध न
सं सं सं सं	ध — सं सं	ध सं ध प	ग रे स रे
क छु न हीं	ला — ग त	ख र च त	न हीं ग ठ
ग — — ग	प रे ग प		
री — — भ	जो रे भै या		

पाठ १६

राष्ट्रीय गीत

जनगण मन-अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा द्रविड़ उत्कल वंगा।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा-उच्छ्‌ल जलधि तरङ्गा।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गावें तव जय गाथा!
जन गण मंगल दायक जय हे भारत भाग्य विधाता,
जय हे! जय हे! जय हे! जय जय जय जय हे!
अहरह तव आह्वान-प्रचारित सुनि नव उदार वाणी।
हिन्दु-बौद्ध-सिख-जैन-पारसिक-मुसलमान क्रिस्तानी।
पूरब-पच्छिम आसे तव सिंहासन पासे,
प्रेमहार हिय गाथा!
जनगण ऐक्य-विधायक जय हे भारत भाग्य विधाता!
जय हे! जय हे! जय हे! जय जय जय जय हे।
पतन अभ्युदय बन्धुर पंथा, युग-युग धावित यात्री,
तुमि चिरसारथि तव रथ चक्रे मुखरित पंथ दिनरात्री।
दारुण विप्लव मांझे, तव शंख ध्वनि बाजे,
संकट दुःख, त्राता।

जनगण-पथ परिचायक जय हे, भारत भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !
घोर तिमिर घन निविड़ निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे।
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल नतनयने अनिमेशे।
दुःस्वप्ने आतंके रक्षा करिले अंके।

स्नेहमयी तुम माता।

जनगण दुःखत्रायक जय हे, भारत भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !
रात्रि प्रभातिल उदिल रविच्छवि पूर्व उदयगिरि भाले !
गाहे विहंगम पुण्य समीरण तव जीवन रस ढाले !
तव करुणारुण रागे, निद्रित भारत जागे।

तव चरणे नत माथा !

जय जय जय हे जय राजेश्वर, भारत भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !



तरल कहरवा

×				×				×				×			
—	—	स	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	—	ग	ग	रे	ग
—	—	ज	ण	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	—	य	क	जे	य
म	—	—	—	ग	—	ग	ग	रे	—	रे	रे	नी	रे	स	—
हे	—	—	—	भा	—	र	त	भा	—	ग	वि	धा	—	ता	—
—	—	स	—	प	—	प	प	—	प	प	प	प	—	प	प
—	—	पं	—	जा	—	ब	सिं	—	ध	गु	ज	रा	—	त	म
प	ध	म	—	म	—	म	म	म	म	म	म	रे	म	ग	—
रा	—	ठा	—	द्रा	—	व	ड़	उ	त	ख	ल	बं	—	गा	—
—	—	—	—	स	ग	ग	ग	ग	—	ग	रे	ग	प	प	ध
—	—	—	—	वि	—	न्द	हि	मा	—	च	ल	य	मु	ना	—
म	—	म	—	ग	—	ग	ग	ग	ग	रे	रे	नी	रे	स	—
गं	—	गा	—	उ	च्छ	व	ल	ज	ल	धि	त	रं	—	गा	—
—	—	स	रे	ग	ग	ग	—	ग	—	रे	ग	म	—	—	—
—	—	त	व	शु	भ	ना	—	मे	—	जा	—	गे	—	—	—
—	—	ग	म	प	प	प	—	म	ग	रे	म	ग	—	—	—
—	—	त	व	शु	भ	आ	—	शि	ष	मां	—	गे	—	—	—
—	—	म	—	ग	—	रे	रे	रे	रे	नी	रे	स	—	—	—
—	—	गा	—	हे	—	त	व	ज्य	—	गा	—	था	—	—	—
—	—	सं	नी	सं	—	—	—	—	—	नी	धा	नी	—	—	—
—	—	—	जय	हे	—	—	—	—	—	ज	य	हे	—	—	—
—	—	ध	प	ध	—	—	—	—	—	म	म	रे	रे	ग	ग
—	—	—	जय	हे	—	—	—	—	—	ज	य	ज	य	ज	य
र	ग	म	—	ग	—	ग	ग	रे	—	रे	रे	नी	रे	स	—
जय	हे	—	—	भा	—	र	त	भा	ग्य	वि	—	धा	—	ता	—

राष्ट्रीय गीत

बन्देमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम्
शस्य श्यामलाम मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्सनाम्, पुलकितयामिनीम्,
फुल्ल कुसमित द्रुम दल शोभिनीम् ।
सुहासिनीम्, सुमधुर-भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ बन्दे०

त्रिंशत्कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले ।
द्विंत्रिंशत्कोटि भुजैर्धृत खर करवाले ।
के बोले माँ तुमि अवले ।
बहु बल धारणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम् ॥ बन्दे०

तुमि विद्या, तुमि धर्म,
तुमि हृदि, तुमि मर्म ।
त्वं हि प्राणः शरीरें ।
बाहु मे तुमि माँ शक्ति ।
हृदये तुमि माँ भक्ति ।
तो मारई प्रतिमा गाडि ।
मन्दिरे-मन्दिरे मातरम् ॥ बन्दे०

त्वं ही दुर्गा दश प्रहरण धारिणी ।
कमल कमला दल हारिणी ।
वाणी विद्या दायिनी ! नमामि त्वाम् ।
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम् ।
सुजलाम् सुफलाम् मातरम् ॥ वन्दे
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम् ।
धरणीम भरणीम् मातरम् ॥ वन्दे०

स्थाई

	ग म	प ध नी सं	— नी ध प
	वं न	— — दे —	— मा — त
ग म — रेग	रे स — —	स म म —	ग प प —
र म — —	— — — —	सु ज ल म	सु फ ल म
ग म पध प	ध नी नी ध	— — — —	ध नी सं —
म ल य ज	शी — त लम	— — — —	श स्य श्या —
नी सं — —	— नी ध प	ग म रे ग	रे स ग म
म ला म —	— मा — त	र म — —	— — व न्दे
प ध नी सं			
— — दे —			

अन्तरा

ग म प ध	प नी ध —	ध — — —	प ध नी
शु भ्र ज्यो —	ति स ना —	म — — —	पु ल कि
सं — नी सं	— — — —	सं सं नी नी	ध प — —
मा — म नीम	— — — —	फु ल कु स	मि त — —
ग म ग रे	ग म प म	प — — —	स म —
द्रु म द ल	शो — भि नी	म — — —	सु हा —
म — — —	ग म प ध	प ध नी —	ध — — —
नी — म —	सु म धु र	भा — ष णी	म — — —
गं रें गं —	सं — — —	सं रें गं —	— — — —
दु ख दा —	म — — —	व र दा म	— — — —
म ग रे म	— — ग म		
मा त र म	— — वं त		

झण्डा गायन

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला।
प्रेम सुधा सरसाने वाला॥
वीरों को हर्षाने वाला।
मातृ-भूमि का तन मन सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में।
लख कर जोश बढ़े क्षण क्षण में॥
काँपे शत्रु देख कर मन में।
मिट जाये भय संकट सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ २

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लिये स्वराज्य हम अविचल निश्चय॥
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ ३

आओ प्यारे वीरो आओ,
देश धर्म पर बलि-बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गावो,
प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ ४

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय हम कर दिखलायें,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ ५
विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा।

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
धु — स स	रे ग म प	ग म ग रे	स — स —
भं — डा —	ऊं — चा —	र हे — ह	मा — रा —
स सं — सं	स नी ध प	प ध प म	ग — रे —
वि जै — वि	श्व — ति —	रं — गा —	प्या — रा —
ध — स स	रे ग म प	ग म ग रे	स — स —
भं — डा —	ऊं — चा —	र हे — ह	मा — रा —

अन्तरा

रे म — म	म म म म	रे म प ध	म प प —
स दा — श	क्ति — व र	सा — ने —	वा — ला —
सं — सं सं	नी ध प म	प ध नी सं	नी ध प —
प्रे — म सु	धा — स र	सा — ने —	वा — ला —
रें — रें —	सं रें नी सं	प नी प प	प — सं —
वी — रों —	को — ह र	षा — ने —	वा — ला —
सं — सं नी	— ध — प	प ध प म	ग — रे —
मा — तृ भू	— मि का —	त न म न	सा — रा —
ध — स स	रे ग म प	ग म ग रे	स — स —
भं — डा —	ऊं — चा —	र हे — ह	मा — रा —

पाठ १७

भजन

भजन नं० १

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो।
भूलि हैं हम ही तुम को, तुम तो हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
महाराज महा महिमा तुमरी, समझें विरले बुद्धवारे हो।
शुभ शांति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पायें "प्रताप हरी" केहि के अब और सहारे हो।

भजन तीन ताल

स्थाई

×	२	०	३
	स रे	नी — स स	गु — म म
	— — पि तु	मा — त स	हा — य क
प — प —	प — प प	म — गु गु	म — प प
स्वा मी स —	खा — तु म	ही — इ क	ना — थ ह
गु — रे —	स — स रे	नी — स स	गु — म म
मा — रे —	हो — जि न	के — क छु	औ — र आ
प — प —	प — प प	म — गु गु	म — प प
धा — र न	हीं — तिं न	के — तु म	ही — र ख
गु — रे —	स — — —		
वा — रे —	हो — — —		

अन्तरा

	— — नी नी	नी — नी नी	ध — प म
	— — प्र ति	पा — ल क	रो — स ग
प — नी ध	प — प प	म — गु गु	म — प प
रे — ज ग	को — अ ति	श य क रु	ना — उ र
गु — रे —	स — — —		
धा — रे —	हो — — —		

भजन नं० २

(सरगम देखो भजन नं० १)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है, सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।

टुक नींद से अखियां खोल ज़रा,
और अपने प्रभू से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है।

जो कल करना सो, आज कर ले,
जो आज करना सो, अब कर ले।
जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया,
फिर पछताये क्या होवत है।

नादान भुगत करनी अपनी,
ऐ पापी ! पाप में चैन कहां ?
जब पाप की गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है ?

भजन नं० ३

फूलों से तुम हंसना सीखो, भवरों से तुम गाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना ॥

धूएं से तुम सारे सीखो, ऊँची मंजिल जाना।
वायु के झोकों से सीखो, हरकत में ले आना।

वृक्षों की डाली से सीखो, फल पाकर झुक जाना।
मेंहदी के पत्तों से सीखो, पिस-पिस कर रङ्ग लाना ॥

पत्ते और पेड़ों से सीखो, दुःख में धीर बंधाना।
धागे और सुई से सीखो, बिछुड़े गले लगाना ॥

मुर्गे की बोली से सीखो, प्रातः प्रभु गुण गाना।
पानी की मछली से सीखो, धर्म के हित मर जाना ॥

भजन नं० ३

ताल कहरवा

×	×	×	×
सं — सं —	सं — सं सं	नी नी नी सं	नी ध प —
फू — लों —	से — तु म	हं स ना —	सी — खो —
प ध प म	ग रे ग म	प — प —	सं — म म
भं व रों —	से — तु म	गा — ना —	सू — र ज
म — ग र	ग — म —	प — प —	ध थ ध —
की — कि र	नो — से —	सी — खो —	ज ग ना —
ध — प नी	ध नी प —		
औ — र ज	गा — ना —		

भजन नं० ४

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान

किसने देखी तेरी माया
किसने भेद तेरा है पाया

हारे ऋषि-मुनि कर ध्यान ॥ बना ...

यह संसार है तेरा मन्दिर
तू ही रमा है इसके अन्दर

करते ऋषि-मुनि सब गान ॥ बना ...

तू हर गुल में, तू बुल-बुल में
तू हर शाख में हर पातन में

तू हर दिल में है भगवान ॥ बना ...

तू ही बन में, तू ही मन में
तू ही रमा है इक कण-कण में

तेरा रूप अनूप महान ॥ बना ...

तूने राजा रंक बनाये
तूने भिक्षुक राज बिठाये

तेरी लीला ईश महान ॥ बना ...

भजन नं० ४

ताल कहरवा

स्थाई

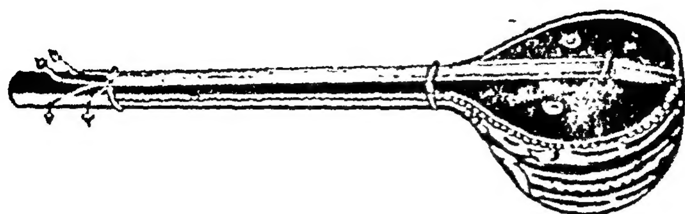
×	×	×	×
प़ स स —	स रे रे स	रे स रे प	ग॒ — ग॒ ग॒
ते — रे —	पू — ज न	को — भ ग	वा — न व
रे ग॒ म प	रे — रे रे	ग॒ रे स नी़	स — स —
ना — म न	म — न्द र	आ — ली —	शा — न —

अन्तरा

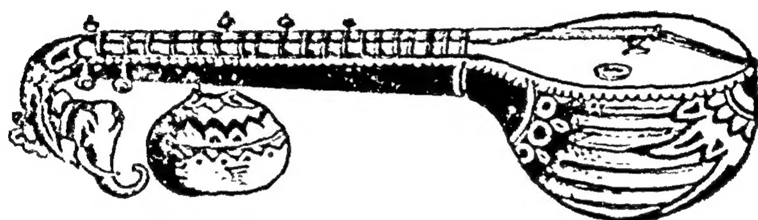
म स स —	रे — रे —	म रे म —	प — प —
कि स नं —	दे — खो —	ते — री —	मा — या —
प प प —	म — म म	प — म प	ग॒ — ग॒ —
कि स ने —	भे — द ति	हा — रा —	पा — या —



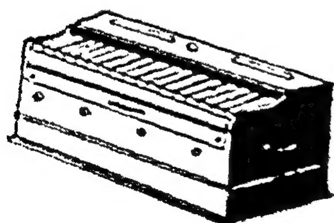
संगीत के वाद्य यन्त्र



तानपूरा



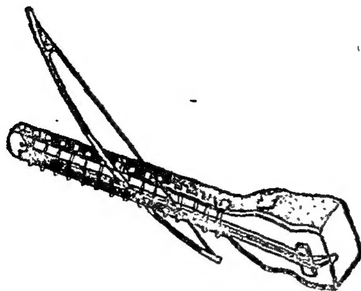
सितार



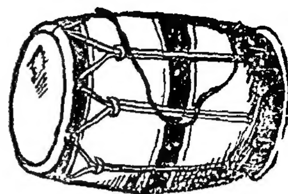
हारमोनियम



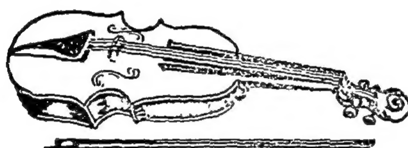
तबला



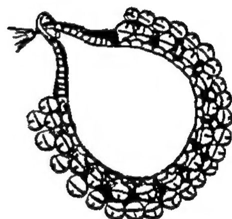
दिलरुबा



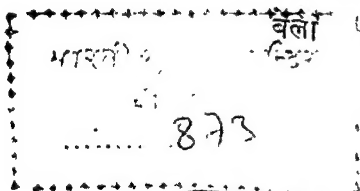
ढोलक



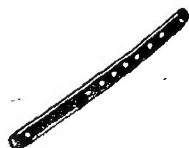
बेला



घुंघरू



शंख



बांसुरी